Paper I
B.A.-III Hons
Page (1)

Ancient history (AIHC & AS)

Impact of Indian culture in Burma

बरमा पर भारतीय संस्कृति का प्रभाव

मलाया, सुमात्रा, जावा आदि दक्षिण पूर्व ए० के देशों में इस्लाम का प्रचार हो जाने के कारण भारतीय धर्म लोप हो गया था पर बरमा निवासी इस समय भी बौद्ध-धर्म के अनुयायी हैं। पालि भाषा का वहाँ अध्ययन-अध्यापन होता है, और वहाँ के लोग बुद्ध द्वारा प्रतिपादित धार्मिक मन्तव्यों को मानते हुए उसी प्रकार से जीवन-यापन करते हैं जैसे कि प्राचीन समय में भारतीय बौद्ध किया करते थे। पर पौराणिक-हिन्दू धर्म का बरमा से लोप हो चुका है। किसी समय वहाँ शैव और वैष्णव धर्मों का भी प्रचार रह चुका है, यह पुरातत्व-सम्बन्धी अवशेषों द्वारा प्रमाणित है।

7वीं शदी के बाद भारत में बौद्ध-धर्म का ह्रास प्रारम्भ हो गया था, और बाद में यह इस देश से प्रायः लुप्त हो गया था। पर बरमा में न केवल प्रचलित ही रहा, अपितु उसके साहित्य तथा दर्शन में निरन्तर विकास भी होता रहा। बहुत से पालि ग्रन्थ बरमा में लिखे गए और वहाँ के स्थविर और ~~भिक्षु~~ विद्वान बौद्ध-दर्शन तथा पालि-साहित्य को समृद्ध बनाने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहे। पालि भाषा उसी तरह से भारतीय भाषा है। बरमा में उसके साहित्य का कितना अधिक विकास हुआ था उसका संकेत 1442 ई० के एक अभिलेख से मिलता है। जिसे कि बरमा के एक शासनाधिकारी ने इसे उत्कीर्ण कराया था। इस अभिलेख में उस शासनाधिकारी तथा उसकी पत्नी द्वारा बौद्ध बौद्ध संघ को दिए गए दान का वर्णन है।

बरमा पर भारत का प्रभाव इतना अधिक रहा है कि, वहाँ के कितने ही प्रदेशों तथा नगरों के नाम भारतीय थे। जो भारतीय उपनिवेशक वहाँ गए उन्होंने अपने नगरों तथा बस्तियों आदि के वे ही नाम रखे। जिनसे वे भारत में परिचित थे। इसलिए बरमा में भी प्रदेशों के नाम अवन्ति, गान्धार, कम्बोज, अपरान्त आदि नाम रखे गए। और वाराणसी, चम्पानगर, कुसुमपुर, मिथिला, पुष्करावती

Scanned with CamScanner

राजगृह, वैशाली आदि नाम की नगरियाँ वहाँ बसाई गई थी। श्रीक्षेत्र, द्वारवती, हंसावती आदि जिन नामों का वर्णन है वे सभी भारत के लिये गए हैं। बौद्ध धर्म के अनुयायी जो लोग भारत से जाकर बरमा में बसे वे अपने मूलदेश के उन स्थानों को नहीं भूल सके जिनका भगवान बुद्ध के जीवन के साथ सम्बन्ध था। उन्होंने अपने नये देश में अनेक स्थानों का सम्बन्ध बुद्ध से जोड़ दिया ताकि उन्हें भी उसी प्रकार पवित्र समझा जा सके। जैसा कि भारत में बोधगया, सारनाथ, कपिलवस्तु आदि पवित्र माने जाते थे। उन्होंने कल्पना की कि बुद्ध बरमा भी गए थे और उनके जीवन के साथ सम्बन्ध रखनेवाली अनेक घटनाएं बरमा में घटी। अपने नये देश के अनेक राज्यों के राजवंशों का सम्बन्ध भी उन्होंने शाक्यकुल के साथ जोड़ दिया। क्योंकि बुद्ध का जन्म उसी कुल में हुआ था। राजा अशोक मौर्य का बौद्ध धर्म के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। इसी राजा के समय में देश-विदेश में बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए महान उद्योग हुआ था। इस दशा में बरमा के बौद्ध अशोक और उसके कुल को भी कैसे भूल सकते थे। उत्तरी बरमा में ~~इरावती~~ इरावदी नदी के तट पर एक प्रदेश को "मौर्य" नाम भी दिया गया था, और उन स्थानों को भी बसाये जाने लगा जिन्हें कि अशोक के समय के बौद्ध प्रचारकों ने अपने कार्य क्षेत्र बनाया था।

पगान के राजाओं ने बरमा में जिन स्तूपों, विहारों और मन्दिरों आदि का निर्माण कराया था वे भारतीय वास्तुशिल्प के अनुसार बनाये गए थे। राजा अनिरुद्ध द्वारा निर्मित श्वेजिगान का स्तूप एक विशाल ठोस महास्तूप है, जिसके चारों ओर देवताओं के तीस मंदिर हैं। उन्हें महास्तूप की पूजा करता हुआ प्रदर्शित किया गया है। श्वेजिगान के महास्तूप तथा समीपवर्ती मन्दिरों का निर्माण भारतीय वास्तु शिल्प के अनुसार किया गया था। उस बौद्ध स्थविर व भिक्षु बड़ी संख्या में भारत से बरमा जाया

page-03

और बरमी भिक्षु भी तीर्थयात्रा आदि के लिए भारत आते रहते थे।

राजा कनिष्का ने जिस आनन्द विहार का निर्माण कराया था वह पूर्णतया भारत के विहारों की अनुकृति है। इस विशाल विहार के प्रत्येक पार्श्व की लम्बाई 175 फीट है, और इसके चारों ओर आँगन है वह 564 फीट लम्बा और इतना ही चौड़ा है। विहार के बीच में 8 फीट ऊँचे सिंहासन पर विशाल बुद्ध-मूर्ति प्रतिष्ठापित है, जो 31 फीट ऊँची है। विहार की पहली परिक्रमा की दीवारों में 80 गवाक्ष हैं जिनमें बुद्ध के जीवन के प्रारम्भ से बुद्धत्व प्राप्ति तक की घटनाएँ अंकित हैं। दीवारों और विहार की छज्जों पर कलश वाली मिट्टी की रूपावलियाँ बनाई गई हैं। इसके तल पर मिट्टी की चमकीली रूपावलियाँ हैं, जिनमें साढ़े पाँच सौ जातक कथाएँ अंकित हैं। सारे मूर्ति-अंकनों की संख्या 1472 है। इस विहार पर भारत का कितना प्रभाव है कि एक फ्रेन्च विद्वान के अनुसार — " इसमें कोई सन्देह नहीं कि जिन वास्तु शिल्पियों ने आनन्द विहार का निर्माण किया था, वे भारतीय ही थे। शिखर से लेकर आधार तक इस विहार में जो कुछ भी है सब भारतीय ही है। इसके गलियारों में जो प्रस्तर मूर्तियाँ हैं और इसकी दिवारों तथा छज्जों पर मिट्टी की जो रूपावलियाँ हैं, सब पर भारत की प्रतिभा तथा शिल्प की छाप स्पष्ट से विद्यमान है--- यद्यपि इस आनन्द विहार का निर्माण बरमा की राजधानी में किया गया था, पर इसे एक भारतीय विहार ही माना जा सकता है।

पगान के चारों ओर 100 वर्गमील का प्रदेश ऐसा है जिसमें पुराने विहारों तथा मन्दिरों आदि के भग्नावशेष सर्वत्र बिखरे पड़े हैं। अनुमान किया गया है कि जिन मन्दिरों आदि के ये अवशेष हैं, वे संख्या में 1000 के लगभग थे। इनमें से

Scanned with CamScanner

बहुसंख्यक तो अब पूर्णतः नष्ट हो चुका है। यहाँ के मंदिरों में जो कला का प्रदर्शन किया है वह पूर्णतया भारतीय वास्तु शिल्प का प्रमाण है।

Dr. Birendra Prasad Singh
Associate Professor
Deptt of AI&AS
Shershah College
Sasaram.

Scanned with CamScanner